४. चाय में डूबी गाय

राहुल उन पढ़े-लिखों में से था, जिन्हें देश के बारे में कम और विदेश के बारे में अधिक जानकारी है। विदेश से लौटकर अपने गौभक्त मित्रों से मिला।

''कंस राक्षसी पूतना से कहता है ''

पूतना! राक्षसी का दूध मनुष्य के लिए जहर है। तुम औरत बनकर जाओ और गोकुल के बच्चों को अपना दूध पिलाकर सभी बच्चों को मार डालो, उनमें मेरा काल भी खत्म हो जायेगा। हा S हा S हा S ...

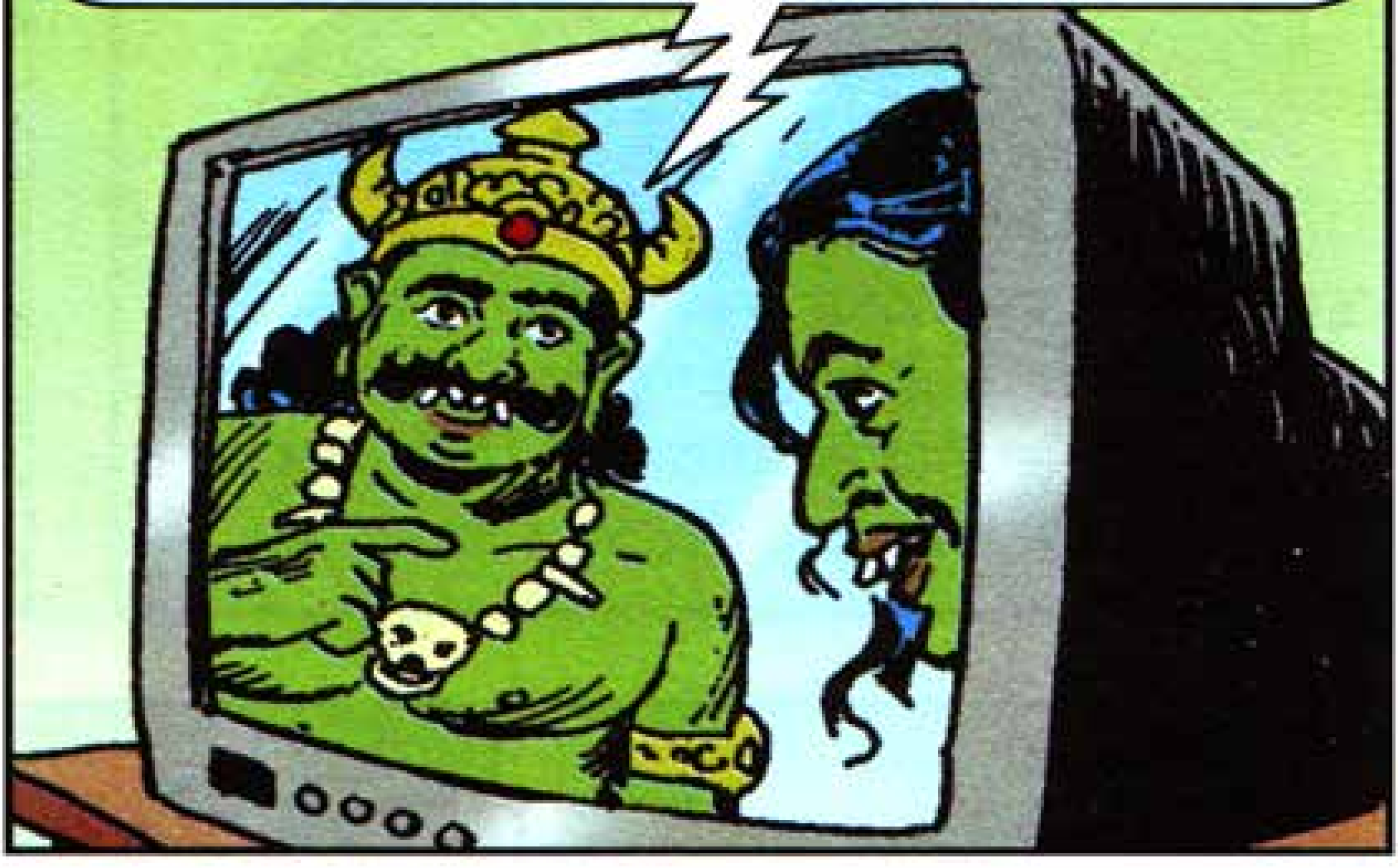

''मुझे लगता है, गायों की तरह दिखनेवाली यूरोप की होलेस्टाइन, जर्सी भी कहीं पूतना जैसी राक्षसियाँ तो नहीं ? जिनके दूध को जहर कहा है।''

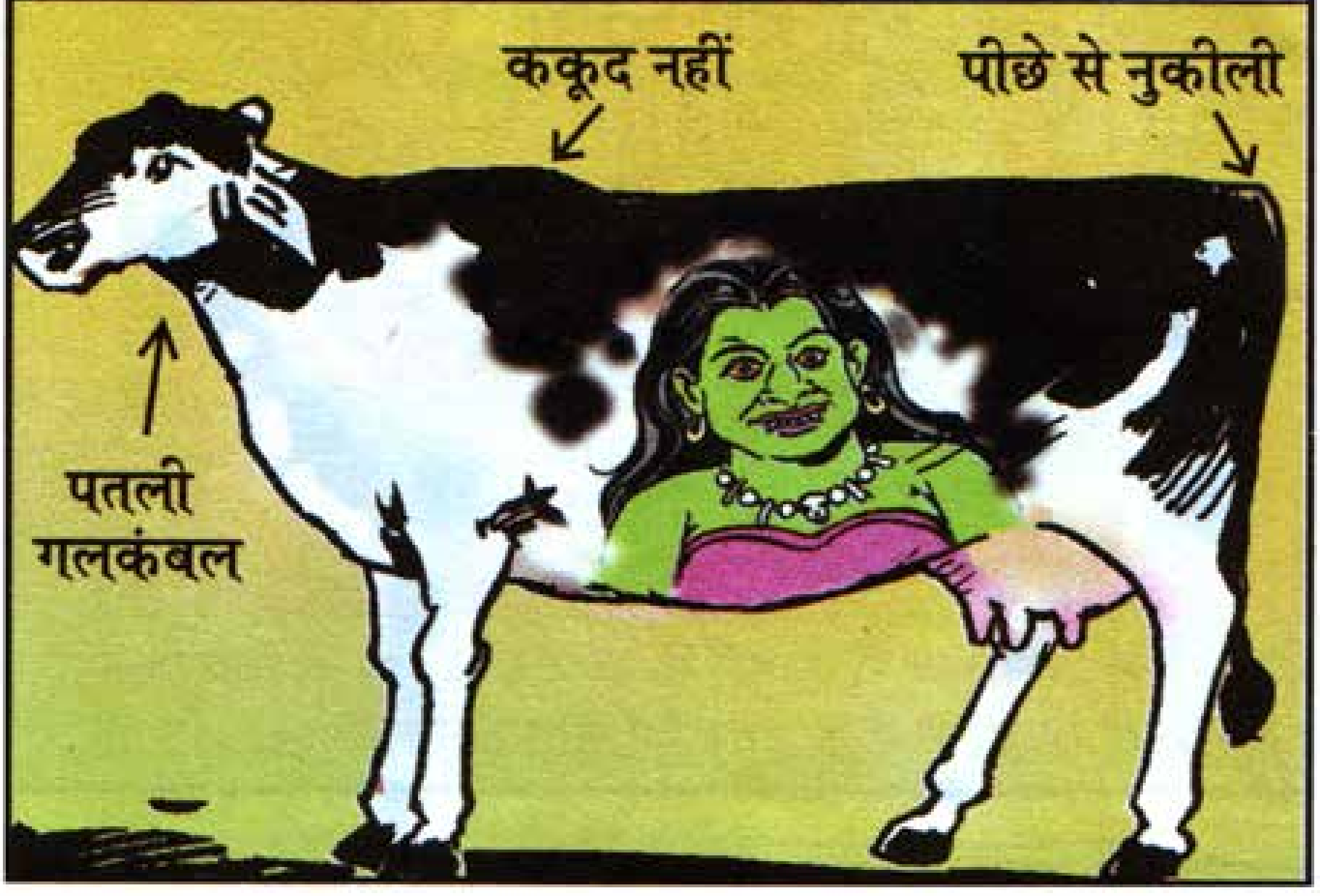

''भारतीय गाय के ककूद और बड़ी गलकंबल होते हैं। हमारी गायों के दूध को तो आयुर्वेद ने अमृत माना है।''

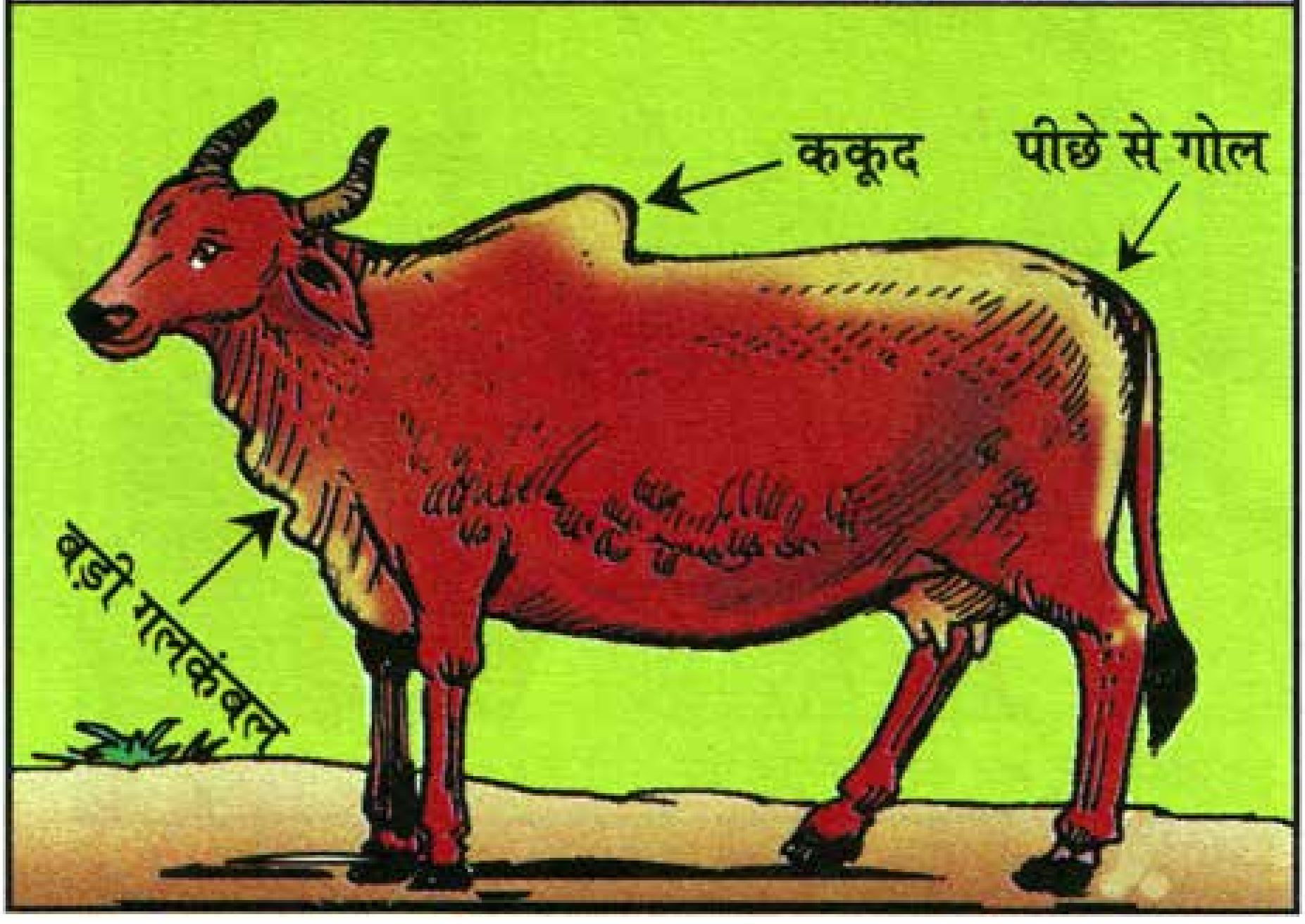

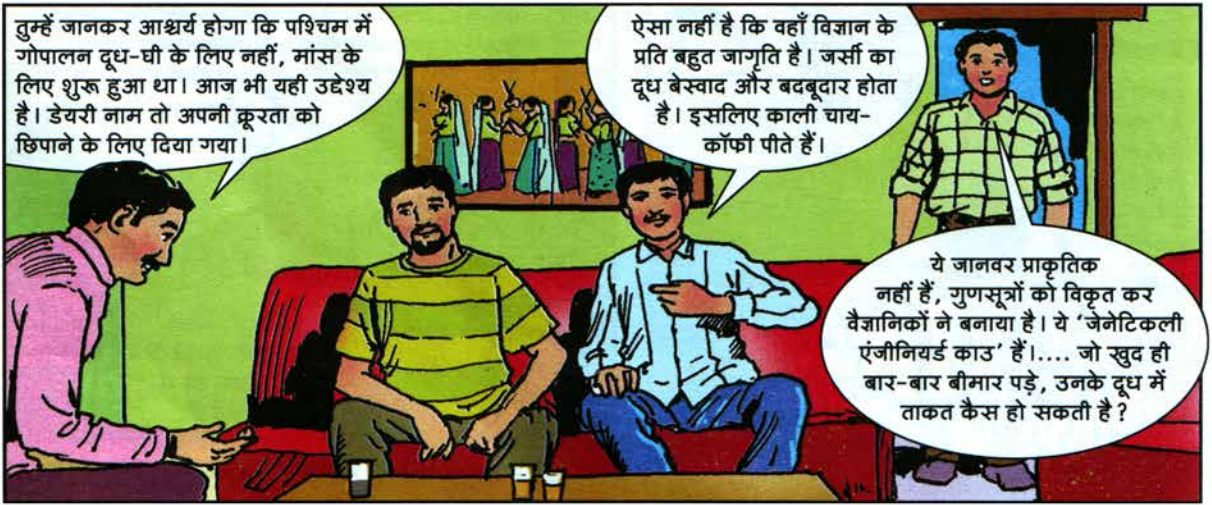
तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि पश्चिम में गोपालन दूध-घी के लिए नहीं, मांस के लिए शुरू हुआ था। आज भी यही उद्देश्य है। डेयरी नाम तो अपनी क्रूरता को छिपाने के लिए दिया गया।
ऐसा नहीं है कि वहाँ विज्ञान के प्रति बहुत जागृति है। जर्सी का दूध बेस्वाद और बदबूदार होता है। इसलिए काली चाय-कॉफी पीते हैं।
ये जानवर प्राकृतिक नहीं हैं, गुणसूत्रों को विकृत कर वैज्ञानिकों ने बनाया है। ये 'जेनेटिकली एंजीनियर्ड काउ' हैं।.... जो खुद ही बार-बार बीमार पड़े, उनके दूध में ताकत कैस हो सकती है?

तुम्हारी बात में दम है। यूरोप में इतना दूध होता है, फिर भी दूध की न तो मिठाइयाँ बनती हैं, न अधिक उपयोग ही होता है। ये दूध का पाउडर बना सस्ती दर पर गरीब देशों में भेज देते हैं।
और ये धर्मात्मा बन, भुखमरी की समस्या मिटाने की आड़ में रोग फैलाते हैं।

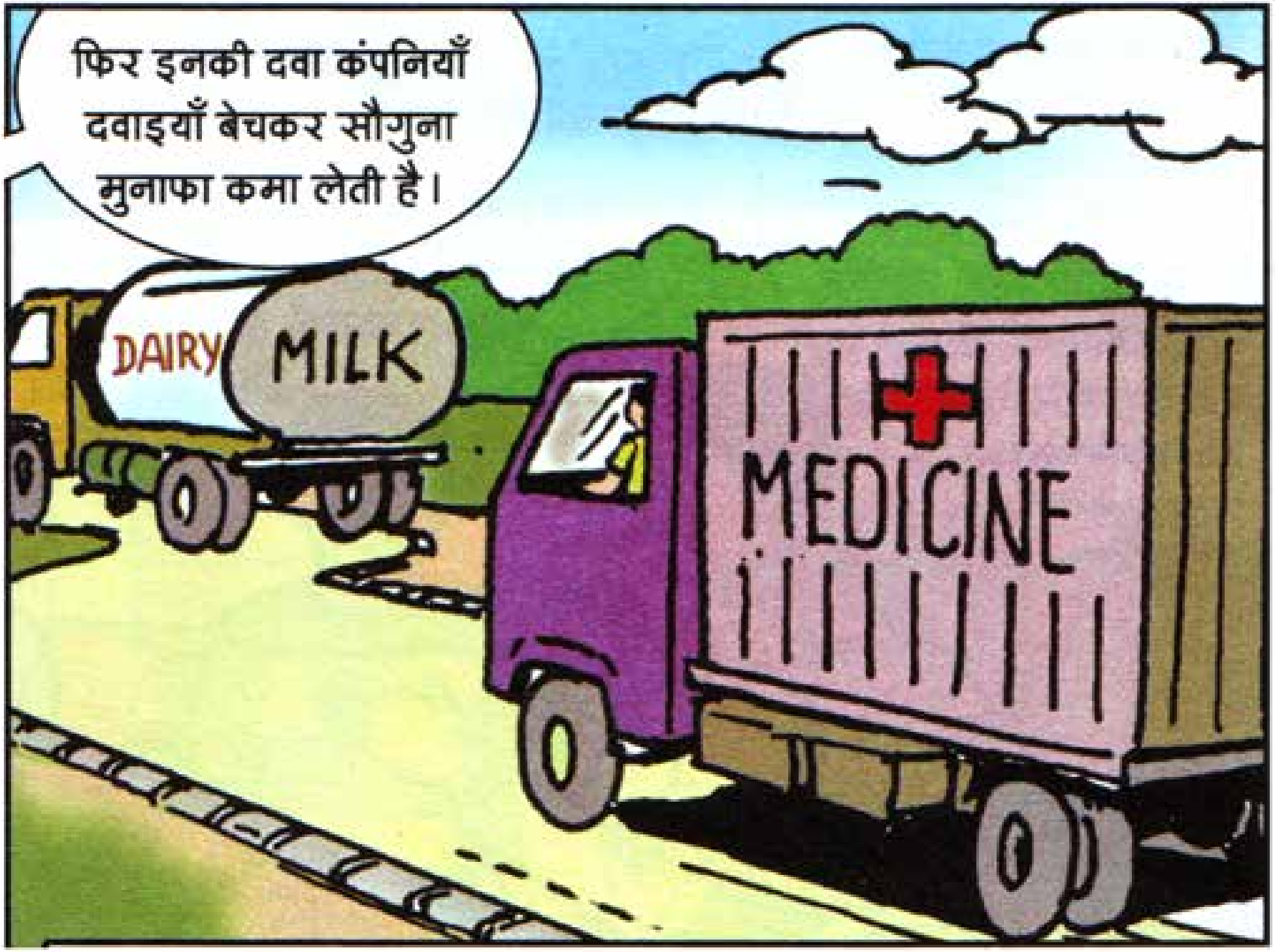
फिर इनकी दवा कंपनियाँ
दवाइयाँ बेचकर सौगुना
मुनाफा कमा लेती है।
DAIRY
MILK
MEDICINE

पूतना का दूध पीने लायक बनाने के लिए कुछ कंपनियाँ घटिया किंतु स्वादिष्ट और सुगंधित चीजें बनाकर बेचती हैं। जिन्हें बच्चों को दूध पिलाने की इच्छा से माता-पिता खरीद लाते हैं।
ऐसे रुपये बर्बाद करने से तो गाय का दूध पाँच रुपये अधिक देकर भी खरीदा जाय तो बहुत सस्ता पड़ता है।
हाँ, भेड़-बकरी-भैंस पालक केवल दूध बेचकर अपना गुजारा नहीं कर सकते। ये इन्हें और इनके नरों को कसाइयों को बेच देते हैं। लेकिन गोपालक मांस की कमाई नहीं करते।
तब तो आज के बाजार भाव से पाँच रुपये अधिक लेना उनका हक और देना हमारा धर्म है। इसे जानकर भी ऐसा न कर धर्मात्मा बननेवाले पाखंडी और गौ-हत्यारे हैं।

पैकिंग सुंदर, चीजें घटिया, दावे ऊँचे
IRON
+
COCO
FREE
VITAMIN
Health
FOOD

एक बात बताओ, यूरोप-अमेरिका ठंडे प्रदेश हैं, इसलिए वहाँ के लोग चाय-कॉफी पीते हैं, लेकिन तुम क्यों यह गंदी चीज पी रहे हो?
गंदी चीज कैसे? चाय तो गरीबों का सहारा है, उसे किसी का स्वागत करना हो, तो चाय ही सबसे सस्ती है। वह खुद भी इतना महंगा दूध नहीं पी सकता।
पहले जब चाय नहीं थी, तो क्या गरीब किसी का स्वागत नहीं करते थे? कई जगह गरीब-अमीर सभी अतिथि का स्वागत देशी गुड़ और पानी से करते थे।
ऐसे ही शेष भारत में भी कोई ना कोई प्रथा होगी ही। आज चाय के चक्कर में पहले केवल पानी पकड़ा दिया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है।

जो चाय-बीड़ी-दवाई के नाम पर हर महीने सैकड़ों रुपये फूँक सकते हैं, वे गरीब नहीं दरिद्र हैं, दरिद्र ही रहेंगे। उनके लिए गोपालकों के पेट पर लात मारने का तर्क ठीक नहीं।
एक बात और - अंग्रेज लाये चाय क्योंकि उन्हें स्वानी थी गाय। चाय भैंस के दूध से अच्छी बनती है। इससे गाय की मांग घटी और गोपालक गाय छोड़ भैंस पालने लगे।
ओह! मतलब चाय की गुलामी, गौ-हत्यारे अंग्रेजों की गुलामी है। तब तो चाय पीकर 'भारत माता की जय' बोलना बेमानी है। आज से चाय बंद, लेकिन फिर क्या पीयें?
तुलसी से बनाया उकाला *। इससे चाय का नशा छोड़ने में आसानी होगी और दिन भर स्फूर्ति भी बनी रहेगी।

लेकिन एक प्रश्न मेरे मन में है। हमारी गायें दूध बहुत कम देती हैं, इसका क्या हल है?
यह भी एक झूठा प्रचार है। अलग-अलग प्रदेशों में भारतीय गायों की 30 से अधिक नस्लें हैं, जिनमें...

...कुछ नस्लों के बैल अच्छे होते हैं, तो कुछ दूध अच्छा देती हैं, जैसे गिर गाय। पूरे विश्व में सबसे अधिक दूध देने का कीर्तिमान इसी के नाम पर है।

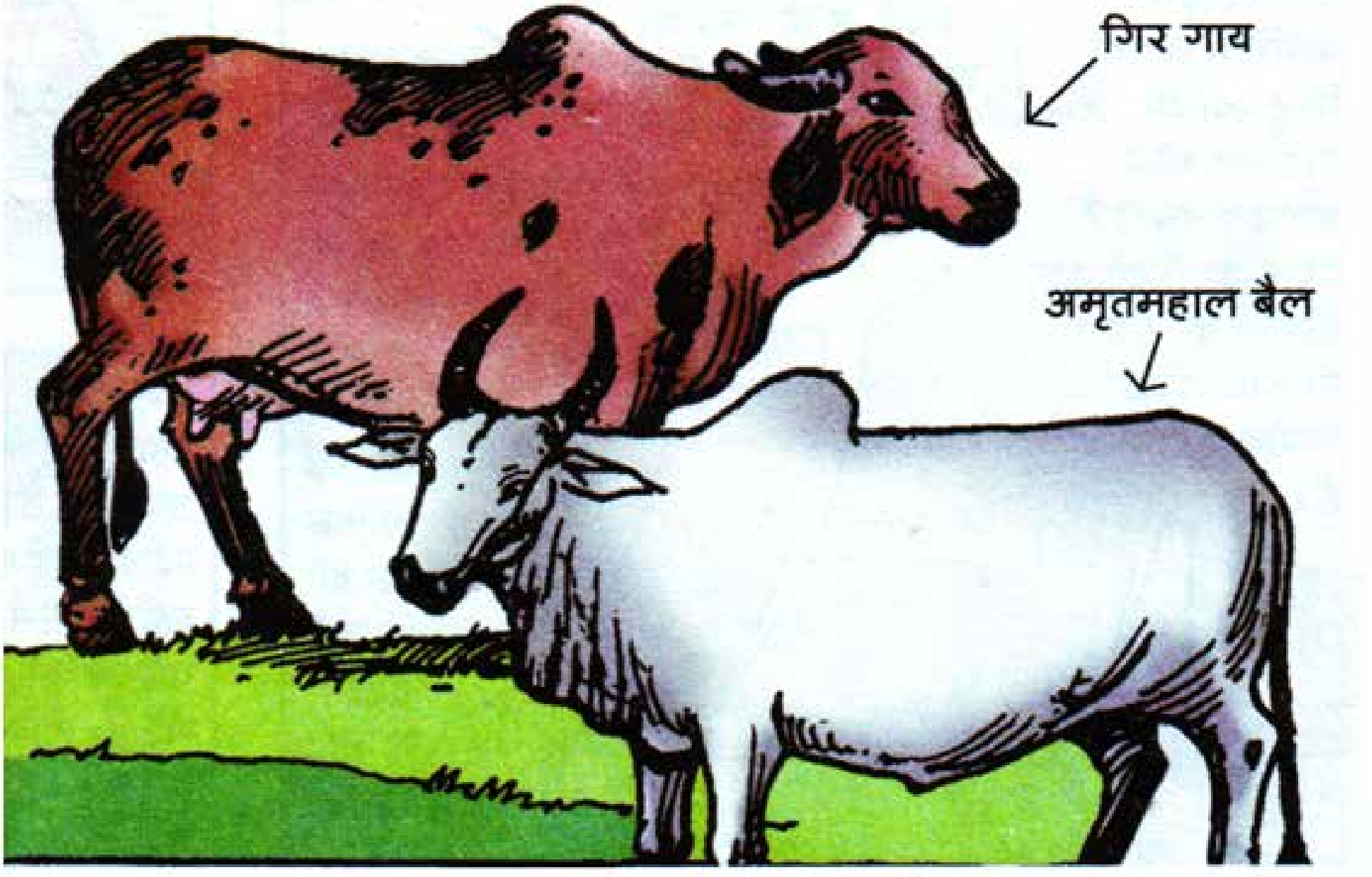

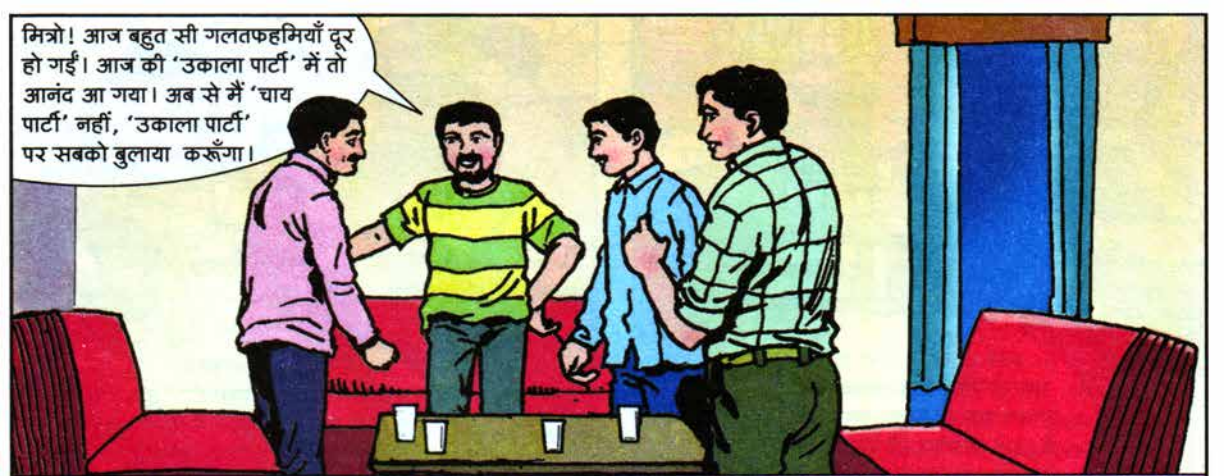

मनुष्य को प्रतिदिन गाय के दूध-दही-घी का ही उपयोग करना चाहिए, लेकिन विशेष परिस्थितियों में बकरी का दूध और भैंस का दही काम में लिया जा सकता है, लेकिन जर्सी आदि नस्लों की तो कोई भी चीज काम में लेने योग्य नहीं।